ओम शांति,

आज स्मृति दिवस है **श्रेस्ठ स्मृतियाँ हमारी श्रेस्ठ स्थिति का निर्माण करती है और जैसी स्मृति वैसी समर्थी भी हम में आ जाती है।** हमें अगर अपनी स्थिति को महान बनाना है, यदि हमें स्वयं को बहोत शक्तिशाली बनाना है तो श्रेस्ठ स्मृतियों में हम रहेंगे। में उसकी और आपको ले चलूँगा आज के स्मृति दिवस पर, क्यूंकि ब्रहमा बाबा व्यक्त से अव्यक्त हुए और आपने बाबा के बारें में इन दिनों में भी बहोत कुछ सुना है बाबा फ़रिश्ते बने और हमें भी फ़रिश्ते बनना है। हम ना केवल उनकी महिमा गाते है बल्कि हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि हम उन्हें फॉलो करें। देखिये बाबा कि और शिवबाबा कि यह सब से बड़ी चीज है कि संसार में भी आज तक बहोत महान आत्माओ का आगमन होता रहा है। महान आत्मा आयी चाहे किसी ने धर्म स्थापित किया या कोई संघ स्थापित किया, कोई संप्रदाय स्थापित किया या किसी और कोई फील्ड में कोई महान पुरुष हुए लेकिन बाबा ने क्या किया? वोह स्वयं तो सब से महान थे ही लेकिन लाखो को महान बना दिया। यह एक अनुपम चीज बाबा के बारें में रही कि उन्होंने अपने जैसे महान, योगी, वैरागी, त्यागी और तपस्वी हजारो क्या लाखो बच्चो को बना दिया।

तो हम सभी उनके प्यार को इस तरह से अपने अंदर समाएंगे कि जैसे वे फ़रिश्ते बने हम भी फ़रिश्ते बने। फरिश्ता क्या है? में आपका ध्यान आज कि मुरली और आजका सुबह का मधुबन का सन्देश उस पर भी थोडा थोडा खींचता हूँ। बाबा ने आज ऊपर पांडव भवन में भोग के समय सन्देश देते हुए कहा सेवा कि **स्टेज को फ़ास्ट करने के लिए बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए तिन धारणाएं स्वयं में अपनाएं १) पहला स्वयं को परिवर्तन करो २) दूसरा विघ्न विनाशक बनो और ३) सब को दुआएं दो।** तीनो पर भी हम एक दृस्टि डालेंगे। हमें फरिश्ता बनना है और आज मेरा यह संकल्प और आप सब भी येही संकल्प ले लें कि आज बापदादा अपनी महान आत्माओ कि फरिश्तो कि सभा में आयेंगे। हमें फ़रिश्ते स्वरुप में बैठना है, बोलो सभी इसके लिए तैयार है? तो बहोत अच्छा अभ्यास अभी से करेंगे बिलकुल मग्न हो जाएँ यह तैयारी बाबा से मिलन कि ही नहीं उनसे वरदान लेने कि उनकी शक्तियां स्वयं में समां ने कि, उनकी दृस्टि से निहाल होने कि तैयारी है।

जब से बाबा अव्यक्त हुए और पहली १८ जनुअरी आयी बाबा ने सुंदर बात केह दी **यह स्मृति दिवस वरदानी दिवस रहेगा।** तो यह दिन हम सभी के लिए वरदानी दिन है आज भी जिसको इस बात को पता रहा होगा उन्होंने सवेरे से ही बाबा से वरदान प्राप्त किये होंगे। नहीं पता था तो हम उसकी तैयारी करेंगे और जब बाबा आयेंगे आज उनसे कोई एक दो तिन सुंदर वरदान ग्रहण करेंगे। तो यह वरदानी दिवस है सभी को वरदान के बारें में दो चीजे याद रखनी है बहोत सुंदर बातें है यह - **वरदानो में शक्ति है आग को पानी में बदलने कि।** इतनी बड़ी ताकत है वरदान में आग सोचलें आग पानी में बदल जाएँ, आग सब चीजो को पानी बना सकती है और आग स्वयं पानी बन जाएँ ऐसी चमत्कारिक शक्ति वरदान में होती है। **हम बाबा से वरदान लेंगे और विधि बता दी बाबा ने जो आत्माएं लम्बा समय ईश्वरीय नशे में रहती है उनकी बुद्धि में वरदानो को धारण करने कि शक्ति आ जाती है।**

तो आज स्मृति दिवस है, हम महान है बाबा कि दृस्टि जिन पर पड़ी बाबा ने करोडो के बिच में से जिनका चुनाव किया सोचें मेरे साथ साथ भगवान् ने जब उपरसे देखा होगा कि निचे इस धरा पर कौन कौन आत्माएं मेरे काम के लायक है? किस किस में चमक ज्यादा है आज सवेरे मुरली में भी चमक पर बहोत अच्छी बातें थी। **जितना जितना तुम पवित्र बनते हो योगयुक्त होते हो तुम्हारी चमक बढ़ती जाती है।** तो जब भगवान् ने ऊपर से देखा होगा कौन कौन मेरी महान आत्माएं धरा पर है तो उसकी नजर किस पर आयी होंगी? हम सब के ऊपर। हम महान है। सभी इस स्मृति में इस स्वमान में स्थित हो जाएँ भगवान् ने हम को चुना है उसकी दृस्टि हम पर पड़ी है वोह रोज वरदानो और शक्तियों से हमारा शृंगार करते है, उन्होंने अपने महान कार्य में हमें भी अपना साथी बना लिया है, रोज हमारा प्रभु मिलन होता

है, हम महान है।

चलिए दो मिनट के लिए डीप साइलेंस में अपने अंदर इस संकल्प को पूरी तरह समां लें में इस धरा पर चमकता हुआ सितारा एक महान आत्मा हूँ, यह सत्य है स्वयं भगवान् ने कहा है बच्चे तुम साधारण नहीं हो बहोत महान हो, हो जाएँ इस नशे में स्थित। गीत बजेगा फिल करना हम महान आत्माओ पर ऊपर से बाबा अपनी शक्तियों कि किरणे डाल रहे है। गीत:- योगी बनो ज्ञानी बनो योगी जीवन है प्यारा

आज बाबा महान आत्माओ कि सभा में आयेंगे। स्वयं भगवान् साधारण आत्माओ कि सभा में आ भी नहीं सकते। सभी ने स्वीकार कर लिया में महान हूँ? देखिये यह बीस हजार कि सभा भी महान आत्माओ कि सभा है अगर हम संसार में किसी भी सभा में हाथ उठवाएं कि कौन महान है तो सब हाथ निचा कर लेंगे सोचेंगे अपने को महान तो सोचना यह तो बड़ी ख़राब बात हो गई। जो महान है, जो इस स्वमान में स्थित हो गए है इस स्वमान से जिनका अभिमान भी ख़त्म हो गया है वोह सचमुच और महान है।

हमें फ़रिश्ते बनना है। **क्या है फरिश्ता?** बहोत संक्षेप में आप सभी इसको जान लें आत्मा मस्तक के मध्य में बैठ कर ब्रेन के मध्य में बैठ कर मन के द्वारा जो कुछ भी सोचती है उसके वाइब्रेशन्स उसकी किरणे हम से चारो और फैलती है ब्रेन में जाती है पुरे देह में फैलती है और संकल्पो के वाइब्रेशन्स में इतनी बड़ी ताकत है उससे ब्रेन का भी निर्माण होता है आँख, कान, नाक, मूह, पूरा देह जो कुछ हमारे देह में है वोह सभी संकल्पो के प्रकाश से निर्मित होता रहता है। आप देखते है इलेक्ट्रॉनिक्स के चमत्कार भी कितने जबजस्त दिखाई देंगे लगेगा कि यह चमत्कार है या क्या है? वाइब्रेशन्स के चमत्कार उससे सौ गुने ज्यादा है। तो जैसा हमें बाह्य शरीर है इस शरीर के अंदर थिक ऐसा ही, ऐसी ही आकृति, ऐसा ही ब्रेन, ऐसी ही आँखे हाथ पैर प्रकाश के शरीर का भी हो जाता है। तो आत्मा दो शरीरो में बैठी है बहार स्थूल शरीर अंदर प्रकाश का सूक्ष्म शरीर। इससे निरंतर लाइट कि किरणे फैलती रहती है रंग बे रंगी इसे कहते है **आत्मा जब सूक्ष्म शरीर में है यह है फरिश्ता स्वरुप।** फरिश्ता डबल लाइट, फरिश्ता बंधन मुक्त, फ़रिश्ते का नाता एक बाबा से, फ़रिश्ते के मन में सभी के लिए भरा रहता है प्रेम और शुभ भावनाएं और फरिश्ता होता है सम्पूर्ण पावन। तो चलें हम दो मिनट के लिए फिर से फ़रिश्ते स्वरुप कि गुड फिलिंग अपने को चमकती हुई आत्मा देखें भृकुटि कि मध्य में, में बहोत तेजस्वी आत्मा, केवल में, दिव्य प्रकाश से भरपूर, ईश्वरीय शक्तियों से भरपूर, बहोत तेजस्वी, अति प्रकाशमान, में चमकती हुई मणि, प्रकाश कि देह में बिराजमान, संकल्प कर लें स्थूल देह मानो है ही नहीं, में प्रकाश कि देह में बिराजमान, अंग अंग से चारो और किरणे फ़ैल रही है, में फरिश्ता हूँ, पवित्रता का फरिश्ता हूँ, बंधन मुक्त हूँ।

ओम शांति।

हमें स्वयं को बदलना है। बाबा कि इस महान कार्य के एक महानता यह भी है कि यहाँ पर हम सभी निरंतर स्वयं को बदलने कि प्रक्रिया में चलते है और जगह यह सब नहीं होता। में आज कि मुरली कि एक बात आप सब को याद दिलाऊं इसको ले आयें अपने अंदर में - **जब तुम विश्व परिवर्तन के लिए संसार को चैलेंज करते हो, हम संसार को बदलके ही दिखाएंगे तो क्या स्वयं को परिवर्तित नहीं कर सकते? बाबा हमें अवेयरनेस दिलाता है, हमें जागृति दिलाता है कि तुम्हारे अंदर बहोत शक्ति है।** पहली शक्ति स्वयं को बदलने कि इसे कहते है परिवर्तन शक्ति। यह परिवर्तन शक्ति हम सब के पास है **हम जस्ट अपने को किसी भी बात में बदलने का दृढ़ संकल्प करें केवल संकल्प कि शक्ति हमारे किसी भी संस्कार को, किसी भी विकार को आधा तो तुरंत बदल सकती है, नष्ट कर सकती है आधे के लिए हमें पुरुषार्थ करना है।** तो हम पहचाने हमारे अंदर परिवर्तन कि महान शक्ति विद्यमान है सब रीअलाइस करें। बाबा ने एक बहोत गहरी बात कही है - तुम अपनी शक्तियों को पहचानो चलते चलते माया के युद्ध में समस्याओं से

संघर्ष करते हुए, व्यर्थ में रहते हुए अनेक आत्माएं अपनी शक्तियों को भूली रहती है। हमारे अंदर शक्ति है अपने को बदलने कि, परिवारों में जो मनुष्य दूसरे को बदलना चाहता है हर व्यक्ति सोचता हो दूसरा बदले और कोई महान आत्मा सोचती हो दूसरा बदले तो दूसरे भी येही सोचेंगे कि तीसरा बदले और कोई नहीं बदलेगा। इसलिए हमें यह संकल्प स्वयं से प्रारम्भ कर देना चाहिए कि मुझे अपने में यह परिवर्तन लाना है। परिवर्तन तो लाना है पर कौनसा? इसको अभी आप निश्चित कर लें और बाबा के सामने यह संकल्प कर लें। आज से मेरा बोलने का तरीका यह होगा, आज से मेरा दृस्टीकॉन दुसरो के लिए ऐसा होगा, आज से में अवगुणी दृस्टि का त्याग कर सब के एप्रिसिएट करुँगी, आज से मेरा बोल सुख देने वाले होगे, आज से में इस परिस्थिति में साइलेंस रहूंगी, आज से में समस्यायों से घभराउंगा नहीं, छोटी छोटी बातों में परेशान नहीं होंगे, खुश रहने का नेचर बनाऊंगा यह संकल्प करें जरा।

कइयों में आदत होती है छोटी बात आयी और परेशान और कई लोग तो ऐसे भी मिलते है परेशान हूँ में बहोत, क्यूँ परेशान हूँ यह मुझे भी नहीं पता। ऐसे बहोत मिलते है खुद ही नहीं पता हम परेशान क्यूँ है, सोचने कि आदत। आज बाबा के समय इस सुंदर दिवस पर जिनके अंदर भी यह आदत हो बहोत ज्यादा सोचने कि, बिना मतलब सोचने कि, इधर उधर का सोचने कि वोह इसको जरा समाप्त करें। तो हम अपने को परिवर्तन करेंगे लेकिन किस में यह आज सोच लेना है, मुझे अपने क्रोध को नष्ट करना है, मुझे अपनी इच्छाओं के फाॅर्स को डाउन करना है, मुझे अपने इस अभिमान को छोड़ना है, मुझे ईर्षा को छोड़ना है, मुझे कमजोर संकल्पो और निरास रहने कि आदत को छोड़ना है निस्चय करो क्या क्या छोड़ना है।

कई युवक आते है मेरे पास बहोत नेगेटिव, कितना भी उनको कोसिस करो कि बी पॉजिटिव, पॉजिटिव हो जाओ लेकिन नहीं हो पाते। जो नेगेटिव सोच रहा है वोह सफलता से सदा ही दूर है, **पक्का कर दें अपने अंदर हमारा पॉजिटिव चिंतन हमारे उज्वल भविष्य का निर्माण करेगा, हमारा पॉजिटिव चिंतन हमें सफलता कि और तेजी से ले चलेगा।** तो परिवर्तन करेंगे। इसके पहले कि हम दूसरे विषय पर आयें चलिए फिरसे हम फ़रिश्ते बन कर चलेंगे फरिश्तो के दुनिया में और बाबा से वरदान लेंगे शुरू करें यह प्रक्रिया भी देखें अपने स्वरुप को, में चमकती हुई आत्मा प्रकाश कि देह में बिराजमान, में फरिश्ता हूँ, बाप सामान फरिश्ता हूँ, कमल आसन पर बिराजमान हूँ, मेरे अंग अंग से रंग बे रंगी किरणे फ़ैल रही है, उड़ चलें आकाश के पार सफ़ेद प्रकाश में, में निचे नहीं ऊपर हूँ, सूक्ष्म लोक में, यह फरिश्तो कि दुनिया, यहाँ परम आनंद है, सामने से दूर से बापदादा आ रहे है, मस्तक में महाज्योति चमक रही है और बाबा के दोनों नैनो से किरणे निकल कर मुझ पर पड़ रही है, बाबा धीरे धीरे मेरी और आ रहे है, मेरे पास आ गए, अपना वरदानी हाथ मेरे सर पर रख दिया, मस्तक पर तिलक दिया, और वरदान दिया बच्चे विघ्न विनाशक भव, स्वीकार करेंगे, सफलता मूर्त भव, बाप सामान भव, विजयी भव, मायाजीत भव, दृस्टि दे रहे है, और दृस्टि लेते लेते हम वापिस निचे
।

ओम शांति।

विघ्नो को नष्ट करने कि शक्ति हमारे पास है इन वरदानो में से कोई भी एक को आप चुन लेंगे आज। सोचें अच्छी तरह विघ्नो और समस्याओं का सामना इस संसार में हर मनुष्य को करना होता है कोई घभरा जाता है और किसी को विघ्न शक्तिशाली बना देता है, किसी कि बुद्धि मंद पड़ जाती है और किसी का विवेक जागृत हो जाता है। **हम इस सत्य को स्वीकार कर लें कि बाबा ने अपना बच्चा बनाते ही हमें विघ्नो को नष्ट करने कि माया को जितने कि शकित प्रदान कर दी है।** हम विघ्नो को भी जित सकेंगे और माया को भी जब भी जीवन में विघ्न आयें समस्याएं आयें तो अपनी शक्तियों को सिमरन करें। स्मृति में शक्ति है जैसे ही याद आएगा मेरे पास समस्यायों को नष्ट करने कि ईश्वरीय शक्ति है शक्तियां जागृत हो जायेगीं। जैसे ही याद आयेंगा में स्वयं विघ्न विनाशक हूँ विघ्न नष्ट होने

लगेंगे। तो बहोत अच्छी बात है **अब समय नहीं है किसी भी विघ्न में स्वयं को उलझने का, अब समय नहीं है विघ्नो में रेह कर अपनी शक्तियों को नष्ट करने का अब समय है विघ्नो को जित कर बहोत पावरफुल बनने का।** समय अपनी अंतिम परछाईयाँ डाल रहा है, तेजी से हम समाप्ति कि और चल रहे है यह बात किसीको समज में नहीं आएगी क्यूंकि बाबा ने केह दिया है - अंत तक बाबा समय के बारें में कुछ नहीं बताएँगे, केवल वोह आत्माएं जो योगयुक्त होंगी जिनकी बुद्धि कि लाइन बहोत क्लियर होंगी वोह समय कि समीपता को समजते जायेंगे।

तीसरी बात - **दुआएं दो।** सोचें हम वोह पुण्य आत्माएं है, हम वोह भाग्यवान आत्माएं है जिन्हे स्वयं भगवान् कि दुआएं मिल रही है और हम यह कला सिख लेनी चाहिए हमें आ जाना चाहिए के हम बाबा कि दुआएं कैसे प्राप्त करें। संसार में आजतक सारे संसार कि कल्चर में येही मान्यता थी कि छोटो के साथ यदि बड़ो कि दुआएं है, माबाप कि दुआएं है तो वोह सहज सफल होते है, उनका जीवन विघ्नो से मुक्त रहता है और जिनके साथ भगवान् कि दुआएं काम कर रही हो सोचलें परन्तु जिन्हे भगवान् दुआएं दे रहा है उन्हें सब को दुआएं देनी है।

में एक छोटा सा उदाहरण दूंगा बहोत बातें आप सब जानते है कोई व्यक्ति आगे बढ़ रहा है, हम उसे आगे बढ़ने देने से रोक रहे है तो क्या है दुआएं देना है? कोई किसी भी फील्ड में सफलता पाना चाहता है हम उसे असहयोग कर रहे है यह दुआएं देना नहीं है, जो आगे बढ़ रहा है उसको आगे बढ़ाना, जो योग्य है उसको आगे बढ़ा देना, जिसमें कोई कमजोरी है, कोई माया कि अधीनता है उसे सहयोग देकर उबार लेना यह सच्ची दुआएं देना है। इसकी बहोत जरुरत है हमारे ईश्वरीय संगठन में भी। तो हम सभी तिन धारणाओं को अपने जीवन में आज से साकार करेंगे, आज के दिन बाबा कि यह सवेरे से ही हम सब के लिए प्रेरणा थी, ब्रह्मा बाबा आज अव्यक्त हुए थे अब से ४५ वर्ष पूर्व, ४५ वर्ष कि लम्बी अव्यक्त पालना मेने यह ४५ वर्ष देखें है कितनी बाबा ने अपने बच्चो कि पालना कि कोई सोच नहीं सकता भगवान् भी कुछ आत्माओ के साथ मेहनत करता होगा? क्या हमने देखा भगवान् को, परम सद्गुरु को अपनी आत्माओ का कल्याण करने के लिए उनके साथ मेहनत करते हुए, उन्हें जागृत करते हुए, उनकी सोयी हुई शक्ति कि उन्हें याद दिलाते हुए। तो बहोत भाग्यवान है हम सभी।

बाबा के जीवन से हमें कुछ चीजे सीखनी अवश्य है। बाबा के बारें में आप सभी ने सुनी होंगी उनका त्याग, उनकी समर्पणता, उनका वैराग्य, उनके चित में समायी हुई प्यार और शुभ भावनाएं यह सब देखि सुनी होंगी। में एक विशेष चीज पर सब का ध्यान दिलाना चाहता हूँ - **बाबा दृढ़ संकल्प धारी थे शुरू से ही जो श्रेस्ठ कार्य करना है वोह करना ही है, संसार सहयोग दे या ना दें चाहे विरोध कि दीवारें खड़ी हो जाए, चाहे सारा संसार विरोध करें उनको महान कार्य करने से कोई रोक नहीं पाया। यह उनकी दृढ़ संकल्प कि स्थिति।** आप सोच सकते है अब तो हमारे पास लाखो का संगठन है १५ लाख १६ लाख उस टाइम बाबा फेस करने वाले अकेले थे बाकि सब को भी सम्भालना था उन्हें और सारे संसार का अपने नजदीकी समाज का सामना करना था लेकिन दृढ़ संकल्प कर लिया कि एक बार सम्पूर्ण निस्चय हो गया तो उनको कोई हिला नहीं पाया। हम बाबा से आज यह दिन यह उनकी महानता सिख लें कि हमें भी अपने लिए, दुसरो के लिए, सेवाओं के लिए जो महान कार्य करना है उसे दृढ़ संकल्प धारी हो कर सम्पूर्ण निस्चय धारी होकर करते रहना है।

मुझे एक दो बात और कहनी है **फरिश्ता बनने के लिए इस अलोकिक जीवन मे आगे बढ़ने के लिए दो चीजो का परम महत्व है १) एक है बाबा कि मुरली और २) दूसरा है यह मधुबन जहाँ भगवान् आते है।** में आपको याद दिलादूं यह तीनो स्थान जहाँ भगवान् कि नजर पड़ी है, जहाँ भगवान् के कदम पड़े है वरदानी स्थान है यदि लोग हरिद्वार जाते है तीर्थ करने, यदि चारो धाम जाते है तीर्थ करने जहाँ भगवान् के चरण नहीं पड़ते जहाँ अनेक पाप आत्माओ के चरण पड़ते रहते है तो यह स्थान जहाँ महान आत्माओ के चरण पड़ते है, जहाँ भगवान् कि दृस्टि पड़ती है यह स्थान वरदानी

स्थान है। कोई भी यह ना सोचें यहाँ आकर क्या करेंगे? कोई सोचते है मुरली तो टीवी पर भी सुनलेंगा ना वही यहाँ आके क्या करेंगे यह बहोत बड़ी मिस्टेक है, बहोत बड़ी मिस्सिंग होगी **केवल मुरली सुनना हमारा लक्ष्य नहीं होता जीवनमे आत्मा को, मन को उन्हें चार्ज कर देना इसी स्थान पर आकर वरदान प्राप्त कर लेना।** मेरे सामने वोह विज़न बहोत क्लियर है जो पांच साल के अंदर ही प्रारम्भ हो जाएगा लाखो लोग यहाँ आयेंगे और यहाँ कि मिटटी भी मस्तक पर लगाकर धन्य होंगे यह समय आ रहा है। हम हंसी में कहा करते है हमारे कैम्पस में तो मिटटी भी नहीं रही सब जगह फर्स पड़ गया फिर भी फर्स से मिटटी उठाके मस्तक पे धारण करेंगे। यह जादू कि नगरी बन जायेंगे यह स्थान, यहाँ आकर सभी को दिव्य अनुभव हुआ करेंगे अब भी होते है इसलिए इन तीनो स्थानो के महत्व को कोई कम ना आंके।

मुरली कि बात हम बार बार सुनते है कि बहोत लोग नेट से, मोबाइल फ़ोन से, या पीस ऑफ़ माइंड चैनल से मुरली सुन लेते है थिक है यह भी अच्छी बात है घर घर में मुरली चलती है अनेक लोग प्रोग्राम देखते है में सुनता हूँ मुझे कोई कुमार आपमें से ही कोई सुना रहा था परसों कि मेरे माबाप और परिवार मेरा बहोत विरोध करते थे और अब जो पीस ऑफ़ माइंड के प्रोग्राम कुछ देखें वोह भी देखने लगे और मुझे उठाके रोज कहते है जाओ भागो सेंटर में यहाँ क्या कर रहे हो? जो विरोध करते थे वोह सहयोगी बन गए। तो पीस ऑफ़ माइंड और उसमें आने वाले प्रोग्रम्म नो डाउट बहोत कल्याणकारी है पर मुरली का महत्व तो मुरली के सुख लेने में है मुरली हम ऐसे सुने कि जीवनमे रस भर जाएँ इसलिए केंद्र पर जाकर मुरली सुनना वोह भी बहोत कल्याणकारी रहेगा। देखिये आप घर में मुरली सुनेंगे सुस्त होंगे लेकिन सेंटर पे जाना है साढ़े छे बजे सात बजे जल्दी जल्दी तैयार होंगे चुस्त होंगे नहाये धोएंगे बाबा को बुलाएँगे और जायेंगे तो कई कमियां वैसे ही समाप्त हो जायेगी।

इसलिए मूल बात पर आजायें - **हमें बाबा कि तरह दृढ़ संकल्प धारी बनना है जैसे बाबा निरहंकारी बनें, जैसे बाबा ने अपने को निर्मल बना लिया, जैसे उन्होंने अपने को में और मेरे से मुक्त कर दिया हमें फॉलो करना है।** हम एक अभ्यास करेंगे फिरसे इससे पहले में आपको बता दूँ ६८ लास्ट दिनों में बाबा सब को चलते फिरते फ़रिश्ते दीखते थे कइयों ने देखा था कि बाबा के कदम धरती पर नहीं है धरती से थोड़े ऊपर है ऐसे बाप के हम बच्चे है।

चलें एक रूहानी ड्रिल करेंगे - ब्राह्मण सो फरिश्ता सो देवता। अपनी बाईं और देखेंगे फ़रिश्ते कि ड्रेस, दाईं और देखेंगे देवताई ड्रेस। एक गेम करेंगे बहोत सुंदर और यह गेम आप करते रहेंगे, बहोत सुंदर ड्रिल है - में ब्राह्मण सूक्ष्म आत्मा इस भाग्यशाली देह में बिराजमान, अपने लेफ्ट साइड में देखें मेरा फ़रिश्ते का शरीर और में आत्मा इस देह से निकली और प्रकाश कि देह में बैठ गई, में फरिश्ता हूँ, लाइट हाउस माइट हाउस फरिश्ता, अब में आत्मा यहाँ से निकली और राईट साइड में अपने देव स्वरुप में प्रवेश कर गई दिव्य काया में, में डबल ताजधारी देवता हूँ, वहाँ से निकल कर आगये अपने ब्राह्मण देह में, इससे निकली और फ़रिश्ते देह में, फ़रिश्ते से निकली देव स्वरुप में, यहाँ से निकली ब्राह्मण शरीर में।

ओम शांति।

यह बहोत सुंदर ड्रिल है फरिश्ता से देवता बनने कि। बहोत इजी हो जायेगी योग में बैठे पांच बार कर लें मन एकाग्र हो जाएगा। में याद दिलाऊं आज कि मुरली से एक सुंदर बात बाबा ने कहा अपने को इस देह में अवतार समझो, जब एक अवतार संसार में क्रांति ला सकता है तो क्या इतने अवतार संसार में महान क्रांति नहीं ले आयेंगे? कैसे करना है इसको? हम जानते है शिवबाबा अवतार बनकर अवतरित होकर हमारे बिच में आयें और संसार में पवित्रता कि क्रांति लादी, आध्यात्म कि क्रांति लादी, इस क्रांति कि संसार को बहोत जरुरत थी। अब हमारे द्वारा विश्व व्यापी क्रांति इस धरा पर आध्यात्मिकता कि वेव्स फ़ैल जाएँ, इस धरा पर आलोकिक वेव फैलने लगे हर आत्मा पवित्र बनने का

संकल्प करने लगे, विकारो से वैराग्य होने लगे, पाप कर्मो से मुक्त होने कि इच्छा होने लगे ऐसी एक रूहानी क्रांति हमें लानी है।

में इस देह में अवतार हूँ यह बहोत सुंदर प्रैक्टिस है बिच बिच में हम सब को करनी है। में एक उदाहरण दूंगा केवल में शांति का अवतार हूँ, मेंने इस देह में अवतार लिया है, इस धरा पर शांति का साम्राज्य स्थापित करने के लिए, मेने इस देह में अवतार लिया है इस धरा पर पवित्रता कि पुनः स्थापना करने के लिए। इसको अपने चित में समाएं जरा क्यूँ हम अवतरित हुए है? प्यूरिटी, सुख शांति का दैवी स्वराज्य स्थापित करने के लिए। चिंतन करना है आगे। में पवित्रता कि अवतार हूँ तो मुझे अपनी दृस्टि से चारो और पवित्र वाइब्रेशन्स फ़ैलाने है, संसार कि कोई अपवित्रता मुझे टच नहीं कर सकती क्यूंकि ऊपर से बाबा ने मुझे पवित्रता और शांति कि शक्ति से भरपूर करके निचे भेजा है देखिये आपको कितना आनंद आएगा। में शांति कि अवतार हूँ मुझे इस धरा पर शांति स्थापित करनी है, मुझे अपने बोल से, अपने व्यवहार से दुसरो को शांत करना है, संसार कि कोई अशांति किसी के बोल, किसी का व्यवहार मुझे अशांत नहीं कर सकता क्यूंकि में शांति कि शक्ति से भरपूर हूँ। बहोत सुंदर चिंतन करके सवेरे से ही अपने को इस स्थिति में स्थित कर दें। हजारो आत्माएं अगर इस स्थिति में इस फिलिंग में रहने लगे में तो अवतरित हुई हूँ बाबा के साथ और ऐसे ही नहीं खाली ही नहीं बाबा ने अपनी शक्तियों से सम्पूर्ण प्यूरिटी से भरपूर करके मुझे निचे भेजा है कि जाओ बच्चे संसार का कल्याण करो तो हमारे द्वारा इस वसुंधरा पर आध्यात्मिक क्रांति कि लहर फ़ैल जायेगी।

आज बाबा आ रहे है अभी से सभी अपने को बहोत ख़ुशी और आनंद में करदें। मेरे जैसा भाग्यवान कोई नहीं है क्यूंकि आज स्वयं भगवान् मुझसे मिलने आ रहे है। करें सभी अपने को नशे में मेरे भाग्य के क्या कहने भगवान् भी जिनके भाग्य का गुणगान करता है, आज स्वयं भगवान् मुझसे मिलने आ रहे है। करेंगे दो मिनट प्रैक्टिस देखें ऊपर को महाज्योति सर्व शक्तिवान, ज्ञान सूर्य निचे आ रहे है मुझ से मिलने, अपना धाम छोड़ कर, अपनी किरणे चारो और फैलाते हुए निचे आ रहे है, आ गए हमारे आँखों के सामने, सामने देखें ज्ञान सूर्य को, सामने से उनकी किरणे पड़ रही है। ओम शांति।

अपने को नशे में ले चलें आज हम उनसे मिलेंगे जिनसे मिलने कि युगो से हमें प्यास थी, आज हम उन्हें देखेंगे जिन्हे देखने के लिए यह आँखें तरसती थी, आज हम उनके साथ बैठेंगे दो तिन घंटे, सोचो, भगवान् के साथ बैठेंगे लम्बाकाल, उनके वाइब्रेशन्स में बैठेंगे, उनके प्यार में मग्न होंगे अपने को नशे में रखेंगे अब से और तब तक जब तक बाबा हमारे बिच में रहेंगे। कम से कम चार घंटे, चार घंटे के लिए आप अपने को तैयार करदें हमें अपनी बुद्धि को सम्पूर्ण एकाग्र, ईश्वरीय नशे और ख़ुशी में रखना है आज मेरे भाग्य सूर्य उदय हुआ है स्वयं भगवान् से मेरी मुलाकात होगी, इन नैनो से दिव्य नैनो से अपने सामने बैठा हुआ उनको देखेंगे, दादी आएँगी हमारे बिच में बाबा को भोग लगाया जाता है गीत बजेंगे और दादी ध्यान में जायेगी, जब गीत बजे आजकल बाबा आठ दस मिनट के अंदर ही आजाते है। जब गीत बजे तब सभी विशेस रूप से यह अभ्यास करेंगे जो हमने अब किया मेरे जैसा भाग्यवान कोई नहीं क्यूंकि स्वयं भगवान् आज मुझसे मिलने आ रहे है और फिल करेंगे वोह निचे आ रहे है आँखों के सामने आ गए। कभी फिल करेंगे उनकी किरणे ऊपर से मेरे ऊपर लगातार पड़ रही है, बहोत अच्छी एकाग्रता के साथ।

बाबा आयेंगे सफ़ेद लाइट होती है और बाबा सभी को दृस्टि देते है, इस दृस्टि के महत्व को जानते हुए सभी बहोत एकगरचित होकर बैठेंगे, देखिये बाबा कि दृस्टि तो लाइट हाउस कि तरह पूरी सभा पर घूमती जाती है, सब महसूस करेंगे बाबा बैठे है दादी के मस्तक में सर्व शक्तिवान बैठे है उनके स्वरुप पर अपनी बुद्धि क स्थिर कर देंगे, उनकी तेजस्वी किरणे, शक्तियों कि किरणे फ़ैल रही है लाइट हाउस कि तरह हम उसका आनंद लेंगे, हम अपनी दृस्टि को बाबा पर एकाग्र रखेंगे तो बाबा के वाइब्रेशन्स कि बहोत सुंदर अनुभूति होगी और उसी समय बाबा से कोई वरदान ले

लें और कोई अपनी बुराई को परिवर्तन करने का दृढ़ संकल्प कर लेंगे। बहोत इम्पोर्टेन्ट रहेगी यह बात क्यूंकि उस समय बाबा कि दुआएं हमारे साथ होती है, उनकी दृस्टि से निकले हुए वाइब्रेशन्स हमारे साथ होते है, और हम भी क्यूंकि एकाग्र चित है तो हमारा अंतर मन बहोत पावरफुल बहोत एक्टिव रहता है। उस समय का किया हुआ दृढ़ संकल्प हमारे लिए बहोत उपयोगी सिद्ध होगा। उसके बाद बाबा मुरली सुनाएंगे, मुरली तो आजकल प्यार के सागर कि प्यार कि झलक दिखाने वाली होती है हम उस प्यार में अपने को मग्न करेंगे। सभी क्वेश्चन, सभी संकल्पो को विदाई दे कर बाबा से एक रूप हो जायेंगे बस बाबा और में मग्न अवस्था, जो कुछ मुझे वोह केह रहा है उसमें लीन कुछ याद दिलाएगा तुम विजयी रत्न हो बच्चे, तुमने कल्प कल्प इस माया को जीता है, हम इसे स्वीकार करते चलेंगे। मेने एक उदाहरण दिया यह जो भी बाबा हमें स्मृति दिलाएगा उसका स्वरुप बनेंगे, मुरली सुनते हुए भी बाबा से लगातार वाइब्रेशन्स लेते रहेंगे बहोत अच्छा होता है सभा में भी वाइब्रेशन्स बहोत प्यार के भरपूर रहते है कोई भी समज सकता है कि यहाँ कोई महान पुरुष नहीं बैठा है स्वयं भगवान् बैठा है। फिर दादियां स्टेज पर आती है बाबा को भोग लगता है और हम सभी उस सब को देखने का आनंद लेंगे। में हमेशा शुरू से ही यह करता रहा हूँ हम देखें भगवान् कैसे देखता है? हम देखें वोह कैसे भोग स्वीकार करता है, वोह कैसे बोलता है, उसकी फीलिंग्स क्या है सब के लिए, देखने का आनंद लें और अपने नैनो को तृप्त कर लें आज आये हुए बाबा को अपने तीसरे नेत्र से देख कर।
तो इस तरह हम सभी प्रभु मिलन का सम्पूर्ण आनंद लेंगे और आज से अपने को अवतार समज कर इस संसार में ऐसी ही विचरण करेंगे जैसे बाबा ने विचरण किया और संसार का कल्याण किया।

-: ओम शांति :-

-: क्लास कि चुनी हुई पॉइंट्स :-

- ✓ श्रेस्ठ स्मृतियाँ हमारी श्रेस्ठ स्थिति का निर्माण करती है और जैसी स्मृति वैसी समर्थी भी हम में आ जाती है।
- ✓ स्टेज को फ़ास्ट करने के लिए बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए तिन धारणाएं स्वयं में अपनाएं १) पहला स्वयं को परिवर्तन करो २) दूसरा विघ्न विनाशक बनो और ३) सब को दुआएं दो।
- ✓ यह स्मृति दिवस वरदानी दिवस रहेगा। वरदानो में शक्ति है आग को पानी में बदलने कि। हम बाबा से वरदान लेंगे और विधि बता दी बाबा ने जो आत्माएं लम्बा समय ईश्वरीय नशे में रहती है उनकी बुद्धि में वरदानो को धारण करने कि शक्ति आ जाती है।
- ✓ स्वयं भगवान् ने कहा है बच्चे तुम साधारण नहीं हो बहोत महान हो
- ✓ जब तुम विश्व परिवर्तन के लिए संसार को चैलेंज करते हो, हम संसार को बदलके ही दिखाएंगे तो क्या स्वयं को परिवर्तित नहीं कर सकते? बाबा हमें अवेयरनेस दिलाता है, हमें जागृति दिलाता है कि तुम्हारे अंदर बहोत शक्ति है।
- ✓ हम जस्ट अपने को किसी भी बात में बदलने का दृढ़ संकल्प करें केवल संकल्प कि शक्ति हमारे किसी भी संस्कार को, किसी भी विकार को आधा तो तुरंत बदल सकती है, नष्ट कर सकती है आधे के लिए हमें पुरुषार्थ करना है।
- ✓ पक्का कर दें अपने अंदर हमारा पॉजिटिव चिंतन हमारे उज्वल भविष्य का निर्माण करेगा, हमारा पॉजिटिव चिंतन हमें सफलता कि और तेजी से ले चलेगा।
- ✓ हम इस सत्य को स्वीकार कर लें कि बाबा ने अपना बच्चा बनाते ही हमें विघ्नो को नष्ट करने कि माया को जितने कि शकित प्रदान कर दी है।

- ✓ अब समय नहीं है किसी भी विघ्न में स्वयं को उलझने का, अब समय नहीं है विघ्नो में रेह कर अपनी शक्तियों को नष्ट करने का अब समय है विघ्नो को जित कर बहोत पावरफुल बनने का।
- ✓ बाबा दृढ़ संकल्प धारी थे शुरू से ही जो श्रेस्ठ कार्य करना है वोह करना ही है, संसार सहयोग दे या ना दें चाहे विरोध कि दीवारें खड़ी हो जाए, चाहे सारा संसार विरोध करें उनको महान कार्य करने से कोई रोक नहीं पाया। यह उनकी दृढ़ संकल्प कि स्थिति।
- ✓ हम बाबा से आज यह दिन यह उनकी महानता सिख लें कि हमें भी अपने लिए, दुसरो के लिए, सेवाओं के लिए जो महान कार्य करना है उसे दृढ़ संकल्प धारी हो कर सम्पूर्ण निस्चय धारी होकर करते रहना है।
- ✓ फरिश्ता बनने के लिए इस अलोकिक जीवन मे आगे बढ़ने के लिए दो चीजो का परम महत्व है १) एक है बाबा कि मुरली और २) दूसरा है यह मधुबन जहाँ भगवान् आते है।
- ✓ हमें बाबा कि तरह दृढ़ संकल्प धारी बनना है जैसे बाबा निरहंकारी बनें, जैसे बाबा ने अपने को निर्मल बना लिया, जैसे उन्होंने अपने को में और मेरे से मुक्त कर दिया हमें फॉलो करना है।